STATIC AMD DYNAMIC EQUILIBRIUM

COMPLIED BY

PRANAV SHEKHAR

ASSISTANT PROFESSOR

DEPARTMENT OF ECONOMICS

NOTES FOR PG SECOND SEMESTER

स्थिर संतुलन को भी दो भागों में विभाजित किया गया है:-(i) स्थैतिक संतुलन (Static Equilibrium) (ii) गतिशील संतुलन (Dynamic Equilibrium / प्रावैगिक संतुलन)

Static analysis में स्थिरता और संतुलन को प्राप्त करने हेतु माँग और पूर्ति वक्रों का एक बिन्दु पर मिलना ही काफी है। Static analysis में वक्त अंतराल (time-lag) को महत्व नहीं दिया जाता। स्थैतिक विश्लेषण केवल संतुलन एवं असंतुलन की प्रवृत्ति एवं दिशा बताती है। संतुलन को असंतुलन में जाने एवं असंतुलन को पुनः संतुलन में आने में कितना वक्त लगा, स्थैतिक विश्लेषण इस तथ्य की अनदेखी करता है।

Dynamic analysis (प्रावैगिक विश्लेषण) संतुलन एवं असंतुलन के बीच माँग और पूर्ति में आई वृद्धि एवं कमी और उसके सुव्यवस्थित होने में जो वक्त लगता है, इस तत्व को विशेष महत्व देता है। अन्य शब्दों में प्रावैगिक विश्लेषण माँग और पूर्ति में आनेवाले असंतुलन एवं उसके बाद प्राप्त संतुलन के बीच लगने वाले समयावधि का विशेष अध्ययन

करता है। उदाहरण के लिए — यदि बाजार में असंतुलन होता है और बाजार में किसी वस्तु की माँग बढ़ जाती है तो बाजार Excess Demand की परिस्थिति का अनुभव करेगा मगर लेकिन अतिरिक्त माँग बढ़ने से पूर्ति तुरंत नहीं बढ़ेगी क्योंकि वस्तुओं के निर्माण एवं उनके परिवहन में समय लगता है। अतः Static संतुलन का यह विश्लेषण की माँग और पूर्ति की शक्तियाँ बाजार को हमेशा संतुलन में रखेंगी और असंतुलन होने पर माँग और पूर्ति तुरंत उस परिस्थिति में संतुलन प्राप्त कर लेंगी, गलत है क्योंकि वस्तुओं के माँग बढ़ने से लेकर वस्तुओं के निर्माण एवं उनके परिवहन में वक्त लगता है। अतः वस्तुओं की पूर्ति या माँग तुरंत संतुलन में नहीं आ पाती। इसलिए Dynamic Equilibrium का सिद्धांत ज्यादा व्यावहारिक एवं उपर्युक्त होगी।

⇒ Dynamic Equilibrium and cobweb model :—

Dynamic या प्रावैगिक संतुलन अर्थशास्त्र में तब स्थापित होता जब हम संतुलन काल में समयावधि के तत्व का ध्यान रखते हैं। प्रावैगिक / गतिशील संतुलन में बाजार माँग पूर्ति का अत्यंत व्यावहारिक चित्रण किया जाता है। उदा० — यदि हम यह मानें कि $D = S$ एक संतुलन की प्रक्रिया है तो $D_t = S_t$ भी एक संतुलन का प्रकार होगा। ~~दोनों~~ मगर दोनों समी० में अंतर है। प्रथम समीकरण $D = S$ एक Static equilibrium को दर्शाता है लेकिन जिसमें समयावधि का ध्यान नहीं रखा गया है वहीं दूसरी समीकरण $D_t = S_t$ एक Dynamic equilibrium है क्योंकि इसमें

समयावधि का ध्यान रहता गया है, जहाँ D_t का अर्थ किसी वस्तु की माँग एक निश्चित समयावधि में (Demand of the commodity at particular time period), उसी प्रकार S_t का अर्थ किसी वस्तु आपूर्ति एक निश्चित समयावधि में (supply of a commodity at the particular time period)। इस प्रकार dynamic equilibrium तब स्थापित होता है जब एक निश्चित समयावधि में वस्तु की माँग वस्तु की पूर्ति के बराबर है।

Dynamic संतुलन में दो तत्व माँग और पूर्ति में एक बात ध्यान देने योग्य है कि वस्तु की माँग तो हमेशा current prices के आधार पर होगी, लेकिन वस्तु की आपूर्ति कीमत उसके पिछले वर्ष के कीमत के आधार पर निर्धारित होगी। स्थैतिक संतुलन में माँग तो current prices (चालू कीमत) पर लिए जाते हैं मगर आपूर्ति ~~समान्य~~ की कीमत सामान्य तौर पर पिछले वर्ष के कीमत पर निर्धारित होती है।

$$S_t = (P_{t-1})$$

इसका तात्पर्य यह है कि वस्तु की आपूर्ति कीमत उसके पिछले वर्ष की कीमत पर निर्धारित की जाती है।

यदि माँग पक्ष की बात करें तो वस्तु की माँग हमेशा वर्तमान प्रचलित कीमत पर ही की जाती है, वस्तु अर्थशास्त्रियों का यह मानना है कि Time-lag (समयअंतराल) हमेशा पूर्ति पक्ष में होता है। माँग पक्ष में यह समय अंतराल असामान्य परिस्थितियों

मे उत्पन्न होता है। उदा० – यदि किसी अर्थव्यवस्था
में मंदी आ गई तो वहाँ वस्तुओ की आपूर्ति होगी
मगर वस्तुओं की माँग नहीं रहेगी और उस समय
वस्तुओ की माँग को उत्पन्न होने मे वक्त लगेगा,
और वक्त अंतराल माँग पक्ष की ओर से दर्शाया
जाएगा मगर इस वक्त अंतराल की स्थिति माँग
पक्ष के लिए असामान्य है। वस्तुत माँग पक्ष मे
वक्त अंतराल नहीं होता और वस्तुओ की माँग उनकी
चालू प्रचलित कीमत पर ही की जाती है।